ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 304-310**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

सिंहली एवं भारतीय आर्यभाषाओं के मध्य ऐतिहासिक भाषिक अंतर्संबंधों का अध्ययन

डी. एम. एस मधुभाषिणी कुलसिंह (सुगंधि)
शोध अध्येत्री, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (भारत)

Received-15.12.2024, Revised-21.12.2024, Accepted-28.12.2024 **E-mail: sugandhikulasinghe6@gmail.com**

सरांश : *भौगोलिक दृष्टि से भारत, दक्षिण एशिया में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे विशाल देश है तथा जनसंख्या की दृष्टि से भी विश्व के अग्रणी देशों में से एक देश है। भारत के दक्षिण में स्थित श्रीलंका एक छोटा द्वीपीय राष्ट्र है, जो हिंद महासागर में अवस्थित है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार दक्षिण भारत के धनुषकोडी और श्रीलंका के तलैमन्नार के बीच की दूरी लगभग 50 किलोमीटर से भी कम है। वर्तमान में श्रीलंका की दो राजभाषाएँ हैंकृसिंहली और तमिल। सिंहली भाषा का विकास भारतीय आर्य भाषा–परिवार से हुआ है, जबकि तमिल भाषा द्रविड़ भाषा– परिवार से संबंधित है, जो भारत की अनेक भाषाओं के विकास का मूल स्रोत भी रहा है। इस प्रकार भाषाई स्तर पर भारत और श्रीलंका के बीच पारस्परिक संबंध अत्यंत प्राचीन और सुदृढ़ रहे हैं।*

श्रीलंका के प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य 'महावंसय' (Mahāvaṁsaya) के अनुसार सिंहली वंश की स्थापना छठी शताब्दी में भारतीय राजकुमार विजय द्वारा की गई थी। इस दृष्टि से यह माना जाता है कि सिंहली वंश तथा सिंहली भाषा के निर्माण में भारतीय योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। भारतीय आप्रवासन, व्यापारिक संबंध तथा बौद्ध धर्म के प्रचार– प्रसार जैसे विभिन्न कारकों ने दोनों देशों के पारस्परिक संबंधों को निरंतर सुदृढ़ किया। भाषा केवल मानव भावों के आदान– प्रदान का माध्यम ही नहीं होती, बल्कि वह समाज, संस्कृति और इतिहास का भी दर्पण होती है। डेक हाइम्स के अनुसार " भाषा अधिगम का तात्पर्य 'प्रयोग करना सीखना' (Learning to use) तक सीमित नहीं होता, प्रयोग करके संस्कृति को जानना (Using to learn it) भी होता है" (अग्रवाल & सिंघल 2003, 337)। अतः किसी भाषा को सम्यक रूप से समझने के लिए उसके ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का अध्ययन भी बेहद आवश्यक है। प्रस्तुत लघु शोध–पत्र में भारत और श्रीलंका के बीच विद्यमान भाषाई पारदेशीय आपसदारियों पर चर्चा की गई है।

कुंजीभूत शब्द– हिंदी, सिंहली, भारत की भाषाएँ, श्रीलंका की भाषा, भारत और श्रीलंका, भाषा अधिगम, संस्कृति, सम्यक रूप,।

प्रस्तावना– भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर तथा पढ़कर अपने विचारों और भावनाओं का आदान–प्रदान करता है। सरल शब्दों में, भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावों और विचारों को मौखिक या लिखित रूप में दूसरों तक पहुँचाता है तथा दूसरों के विचारों को समझने में सक्षम होता है। हिंदी के प्रसिद्ध वैयाकरण कामता प्रसाद गुरु ने "हिंदी व्याकरण' में कहा है 'भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली– भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार या स्पष्टता को समझ सकता है" (गुरु 2012, 1)। और भोलानाथ तिवारी के अनुसार "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं" (तिवारी 2022, 216)। श्रीलंका में दो राजभाषाएँ प्रचलित हैं, जिनमें सिंहली तथा तमिल प्रमुख हैं। इनमें सिंहली भाषा का प्रयोग लगभग 87% जनसंख्या द्वारा किया जाता है, जबकि तमिल भाषा का प्रयोग लगभग 28.5% जनसंख्या करती है। भारत में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 122 प्रमुख भाषाएँ और 544 अन्य भाषाएँ हैं। इन भाषाओं में से भारतीय आर्य भाषा– परिवार से विकसित श्रीलंका की सिंहली भाषा तथा भारत की वे भाषाएँ, जो भारतीय आर्य भाषा–परिवार से विकसित हुई हैं, इस शोध– लेख में विशेष रूप से भारतीय और श्रीलंकाई भाषाओं के बीच विद्यमान भाषाई पारदेशीय आपसदारियों के संदर्भ में चर्चा का विषय हैं।

भाषा परिवारों के आधार पर भारतीय आर्य भाषाओं तथा हिंदी भाषा का विकास– भारत प्राचीन काल से ही भाषाई विविधता सहित देश रहा है। भारतीय भाषाओं की बहुलता और विविधता के संदर्भ में चाणक्य का यह कथन अत्यंत उल्लेखनीय है 'पिंडे पिंडे मतिर्भिन्नः, कुंडे कुंडे नवं पयः जातौ जातौ नवाचारः, नवा वाणी मुखे मुखे।' इस कथन का आशय यह है कि प्रत्येक क्षेत्र में लोगों की विचारधारा, आचार– व्यवहार तथा भाषा में भिन्नता पाई जाती है। हिंदी में प्रचलित कहावत "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी" (देवेन्द्रनाथ शर्मा 2022, 105) भी इसी तथ्य को अभिव्यक्त करती है। अर्थात् भारत में थोड़ी– थोड़ी दूरी पर न केवल जल का स्वाद परिवर्तित हो जाता है, बल्कि भाषा और वाणी में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

अनेक भाषाओं और बोलियों से समृद्ध भारत में हिंदी भाषा का विकास एक अत्यंत रोचक एवं बहुआयामी प्रक्रिया रही है। सिंहली भाषा और हिंदी भाषा के पारस्परिक संबंधों को समझने के लिए इन दोनों भाषाओं के इतिहास, संस्कृति तथा भाषिक विकास का अध्ययन बेहद आवश्यक है। डेल हाइम्स के अनुसार, "भाषा और संस्कृति को एक– दूसरे से पृथक करके समझना संभव नहीं है।" (अग्रवाल & सिंघल 2003, 337) इस प्रकार भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना का भी महत्वपूर्ण अंग है।

विश्व की भाषाओं को ऐतिहासिक, संरचनात्मक तथा भाषावैज्ञानिक आधारों पर विभिन्न भाषा– परिवारों में वर्गीकृत किया जाता है, ताकि उनके उद्‌गम, विकास तथा पारस्परिक संबंधों का गहन अध्ययन किया जा सके। सामान्यतः भाषाओं का वर्गीकरण दो प्रमुख आधारों पर किया जाता है, आकृतिमूलक वर्गीकरण तथा पारिवारिक वर्गीकरण।

"आकृतिमूलक वर्गीकरण– आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार है– पदों और वाक्यों की रचना। पद किस प्रकार बनते हैं और वाक्यों की रचना किस प्रकार होती है, इस आधार पर किए जाने वाले वर्गीकरण को आकृतिमूलक कहते हैं। पारिवारिक वर्गीकरण– पारिवारिक वर्गीकरण में रचनातत्त्व के साथ ही अर्थतत्त्व पर भी ध्यान दिया जाता है।" (द्विवेदी 2023, 356) पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार कपिलदेव द्विवेदी ने संसार की भाषाओं को 18 परिवारों में बाँटा गया है। वे इस प्रकार हैंः

1.भारत– यूरोपीय परिवार	2. द्राविड़ परिवार	3. बुरुशस्की परिवार
4. उराल अल्ताई परिवार	5. कॉकेशी परिवार	6. चीनी परिवार
7. जापानी– कोरियाई परिवार	8. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार	9. बास्क परिवार
10. सामी– हामी परिवार	11. सुदानी परिवार	12. बंतू परिवार
13. होतेंतोत– बुशमैनी परिवार	14. मलय– बहुद्वीपीय परिवार	15. पापुई परिवार

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

16. आस्ट्रेलियाई परिवार 17. दक्षिणपूर्व– एशियाई परिवार 18. अमेरिकी परिवार ।

विश्व के विभिन्न भाषा–परिवारों में से पाँच प्रमुख भाषा–परिवारों की भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं। ये भाषा–परिवार हैं – चीनी परिवार, बुरुशस्की परिवार, दक्षिण–पूर्व एशियाई परिवार, द्रविड़ परिवार तथा भारत–यूरोपीय परिवार। भारत की भाषाई विविधता इन भाषा–परिवारों की उपस्थिति के कारण और अधिक समृद्ध तथा बहुआयामी बन गई है।

चीनी भाषा–परिवार की भाषाएँ मुख्यतः चीन, थाईलैंड, बर्मा (म्यांमार), तिब्बत तथा अनाम (वियतनाम) क्षेत्रों में बोली जाती हैं। तिब्बत भारत के उत्तर में तथा बर्मा भारत के पूर्व में स्थित होने के कारण भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों और हिमालयी उपत्यकाओं में इस परिवार की भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। नागा समुदाय से संबंधित अनेक भाषाएँ तथा असम क्षेत्र की 'बोड़ो' और 'गारो' जैसी भाषाएँ इसी परिवार से संबद्ध मानी जाती हैं। यद्यपि ये भाषाएँ चीनी भाषा– परिवार से संबंधित हैं, तथापि इनकी वाक्य– रचना में आर्य तथा द्रविड़ भाषाओं के समान कुछ विशेषताएँ पाई जाती हैं।

बुरुशस्की (खजुवा अथवा कुंजूती) भाषा–परिवार का क्षेत्र मुख्यतः तुर्किस्तान तथा तिब्बत से संबंधित माना जाता है। " भारत का उत्तरी– पश्चिमी छोर– हुंजा; नगर; गिज़िर घाटी; यासिन का एक भाग।" (देवेन्द्रनाथ शर्मा 2022, 151) यह भाषा– परिवार भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाई विविधता और ऐतिहासिक भाषिक संपर्कों का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

दक्षिण– पूर्व एशियाई अथवा आस्ट्रो– एशियाटिक भाषा–परिवार का विस्तार अन्नाम, कंबोडिया, स्याम तथा भारत से लेकर निकोबार द्वीपसमूह तक माना जाता है। इस परिवार को 'मुंडा परिवार' के नाम से भी जाना जाता है। भारत में इस भाषा–परिवार का प्रसार मुख्यतः पूर्वी एवं मध्य भारत के पर्वतीय तथा वनांचल क्षेत्रों में पाया जाता है, जिनमें बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश प्रमुख हैं। मुंडा, संथाली, कुर्कू, सवर, हो, निकोबारी, मोन– ख्मेर तथा मलय आदि इस परिवार की प्रमुख भाषाएँ हैं।

मुंडा भाषा– समूह को मुख्यतः दो शाखाओं में विभाजित किया जाता है– उत्तरी मुंडा तथा दक्षिणी मुंडा। उत्तरी मुंडा भाषाओं का क्षेत्र हिमालय की तराई से लेकर बिहार तक विस्तृत है, जबकि दक्षिणी मुंडा समूह की संथाली, मुंडारी तथा भूमिज आदि भाषाओं का प्रसार छोटानागपुर, उड़ीसा, मध्य प्रदेश तथा दक्षिण भारत के कुछ भागों तक पाया जाता है।

द्रविड़ भाषा– परिवार का विस्तार दक्षिण भारत, उत्तरी श्रीलंका, लक्षद्वीप, बलूचिस्तान, मध्य प्रदेश, बिहार तथा उड़ीसा तक देखा जाता है। इस परिवार की प्रमुख भाषाओं में तमिल, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु, गोंडी, ओराँव तथा ब्राहुई सम्मिलित हैं, जबकि कुई, माल्टो, तुलु तथा कोलामी आदि इसकी गौण भाषाएँ मानी जाती हैं। द्रविड़ भाषा– परिवार भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन एवं समृद्ध भाषाई परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

भारत– यूरोपीय भाषा– परिवार विश्व का अत्यंत व्यापक एवं प्रभावशाली भाषा– परिवार माना जाता है। इसका विस्तार भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, रूस, रोमानिया, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैंड, जर्मनी, अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया के अनेक भागों तक है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवेस्ता, ग्रीक तथा लैटिन इस परिवार की प्राचीन भाषाएँ हैं, जबकि अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, स्पेनी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, इतालवी, फ़ारसी, हिंदी, बंगला, गुजराती तथा मराठी आदि आधुनिक भाषाएँ इसी परिवार से संबंधित हैं।

यह परिवार मुख्यतः दो शाखाओं में विभक्त है केतुम (यह शब्द लैटिन का है और इसका अर्थ है 'सौ'), सतम (यह शब्द अवेस्ता का है और इसका अर्थ है 'सौ')।" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 124) अस्कोली के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की कंठ्य ध्वनियाँ कुछ भाषाओं में कंठ्य रूप में सुरक्षित रहीं, जबकि कुछ भाषाओं में वे संघर्षी ध्वनियों (श, स, ज) में परिवर्तित हो गईं। यह विभाजन भाषाओं के ध्वन्यात्मक विकास और ऐतिहासिक परिवर्तन को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

भारत–यूरोपीय भाषा–परिवार को मुख्यतः दस प्रमुख शाखाओं में विभाजित किया जाता है। इनमें 'केतुम' वर्ग की शाखाओं में ग्रीक (हेलेनिक), केल्टिक, जर्मनिक (ट्यूटॉनिक), इतालिक, हित्ती (हिटाइट/हिट्टाइट) तथा तोखारी भाषाएँ सम्मिलित हैं। दूसरी ओर 'सतम' वर्ग की शाखाओं में बाल्तो–स्लाविक (बाल्तिक एवं स्लाविक), आर्मीनियाई, अल्बानियाई (इलीरी) तथा भारत– ईरानी (आर्य) शाखाएँ सम्मिलित हैं। भारत–ईरानी शाखा को आगे दो भागों– भारतीय तथा ईरानी में विभाजित किया जाता है। हिंदी एवं सिंहली भाषाओं का उद्भव इसी भारत– ईरानी भाषा–परिवार से हुआ है, अतः इन दोनों भाषाओं के ऐतिहासिक तथा भाषिक संबंधों को समझने के लिए इस भाषा–परिवार का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

भारत– ईरानी भाषा– परिवार को भी मुख्यतः तीन भागों– ईरानी, दरद तथा भारतीय में विभाजित किया जाता है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार भारत में आर्यों के आगमन के पश्चात् भारतीय आर्य भाषाओं के इतिहास का प्रारंभ माना जाता है। भारत के प्राचीन निवासियों के संबंध में प्रत्यक्ष प्रमाणों के अभाव में यह मान्यता प्रचलित है कि विभिन्न कालखंडों में अनेक जातीय समूह भारत आए, जिनमें नेग्रिटो, ऑस्ट्रिक, किरात तथा द्रविड़ प्रमुख थे।

"उल्लेख है कि यहाँ 'भारतीय' में भारत के अतिरिक्त 'पाकिस्तान', 'बांग्लादेश', तथा 'श्रीलंका' भी हैं।" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 144) सामान्यतः यह माना जाता है कि लगभग 1500 ईसा पूर्व पश्चिमी एवं उत्तर– पश्चिमी सीमाओं से आर्यों का भारत में आगमन हुआ, जिसके फलस्वरूप भारतीय आर्य भाषाओं के इतिहास का आरंभ माना जाता है। उत्तर भारत में प्रयोग भाषाएँ और सिंहली भाषाओं का मूल स्रोत भारतीय आर्य भाषा–परिवार ही है। अतः भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन से इन दोनों देशों के भाषाओं के पारस्परिक भाषिक संबंधों तथा समानताओं को समझा जा सकता है।

भारतीय आर्य भाषाओं का ऐतिहासिक विकास– भाषिक विशेषताओं के आधार पर भारतीय आर्य भाषाओं को सामान्यतः तीन प्रमुख कालखंडों में विभाजित किया जाता है:

(1) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा 1500 ई. पू– 500 ई.पू तक

(2) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा 500 ई. पू– 1000 ई तक

(3) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा 1000 ई– अब तक

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल (1500 ईसा पूर्व– 500 ईसा पूर्व) को सामान्यतः वैदिक काल के नाम से जाना जाता है। संस्कृत भाषा के विकास की दृष्टि से इस काल को दो प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है– वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम स्वरूप ऋग्वेद में प्राप्त होता है, जिसे भारतीय आर्य भाषाओं का सबसे प्राचीन उपलब्ध साहित्यिक स्रोत माना जाता है। वैदिक संस्कृत का काल सामान्यतः 1500 ईसा पूर्व से 800 ईसा पूर्व तक माना जाता है। इसके पश्चात् 800 ईसा

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक का काल लौकिक संस्कृत का माना जाता है, जिसमें संस्कृत भाषा अधिक परिष्कृत एवं व्यवस्थित रूप में विकसित हुई।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ईसा पूर्व दृ 1000 ईस्वी) को 'प्राकृत काल' के नाम से भी जाना जाता है। इस संदर्भ में आचार्य हेमचंद्र का कथन उल्लेखनीय है– "प्रकृतिः संस्कृतम्। तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्। अर्थात् संस्कृत मूल है और उससे जो उत्पन्न हुई उसे प्राकृत कहते हैं। इस मत के अनुसार संस्कृत में रूप– परिवर्तन होने से प्राकृत की उत्पत्ति हुई।" (देवेन्द्रनाथ शर्मा 2022, 122) इस मत के अनुसार संस्कृत भाषा के रूप– परिवर्तन एवं लोकप्रयोग के परिणामस्वरूप प्राकृत भाषाओं का उद्भव हुआ।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं को सामान्यतः तीन स्तरों में विभाजित किया जाता हैः

(क) प्रथम प्राकृत काल (500 ईसा पूर्व– 1 ईस्वी तक): इस चरण में पालि भाषा तथा अशोक के अभिलेखों की भाषाएँ प्रमुख थीं।

(ख) द्वितीय प्राकृत काल (1 ईस्वी– 500 ईस्वी तक): इस काल में साहित्यिक प्राकृत भाषाओं, जैसे महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी आदि का विकास हुआ।

(ग) तृतीय प्राकृत काल (500 ईस्वी– 1000 ईस्वी तक): इस चरण में अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जिन्हें आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के उद्भव का आधार माना जाता है।

प्रथम प्राकृत काल (500 ईसा पूर्व से 1 ईस्वी तक) में पालि भाषा का विशेष महत्व रहा। पालि को 'पल्लि भाषा' अर्थात् 'गाँव की भाषा' या 'देश भाषा' भी कहा जाता था। इसके अतिरिक्त इसे 'मागधी' नाम से भी संबोधित किया गया है। बौद्ध धर्म के प्रसार में पालि भाषा ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि यह बौद्ध उपदेशों और साहित्य का प्रमुख माध्यम बनकर विश्वभर में प्रतिष्ठित हुई।

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार 'पालि' शब्द 'पाल' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ 'पालन करना' अथवा 'रक्षा करना' है। इस दृष्टि से पालि वह भाषा मानी गई जिसके माध्यम से भगवान बुद्ध के उपदेशों और वचनों की रक्षा एवं संरक्षण हुआ। "पालि शब्द के पुराने प्रयोग 'भाषा' के अर्थ में नहीं मिलते। इसका प्राचीनतम प्रयोग चौथी सदी में लंका में लिखित ग्रंथ 'दीपवंश' में हुआ है।" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 166)

प्रारंभिक पालि साहित्य में 'पालि' शब्द मुख्यतः ग्रंथ या मूल पाठ के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, न कि किसी विशिष्ट भाषा के रूप में। इसी कारण भाषा के संदर्भ में 'पालि' के स्थान पर 'मगध भाषा', 'मागधी भाषा' अथवा 'मागधिक भाषा' जैसे नामों का प्रयोग अधिक प्रचलित था। फलस्वरूप भाषा के अर्थ में 'पालि' शब्द का प्रयोग अपेक्षाकृत आधुनिक माना जाता है।

श्रीलंकाई विद्वानों के मतानुसार पालि भाषा को मगध क्षेत्र की बोली होने के कारण 'मागधी' कहा जाता था। पालि ग्रंथों में भी 'मागधी' शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में मिलता है "सा मागधी मूल भासा करा मायादिकप्पिका।" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 167)

भोलानाथ तिवारी ने पालि और मागधी के संबंध में स्पष्ट किया है कि प्राचीन मागधी में 'श', 'ष' तथा 'स' ध्वनियों के स्थान पर केवल 'श' ध्वनि का प्रयोग मिलता है तथा 'र' के स्थान पर 'ल' ध्वनि का प्रयोग पाया जाता है, जबकि पालि में 'र' और 'ल' दोनों ध्वनियाँ विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त व्याकरणिक दृष्टि से भी पालि और मागधी में पर्याप्त भिन्नताएँ हैं। इसलिए पालि को पूर्णतः मगध की भाषा नहीं माना जा सकता। " इस प्रकर अपने मूल रूप में पाली की शौरसेनी प्राकृत का पूर्व रूप मान सकते हैं।" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 168) इसके विपरीत कपिलदेव द्विवेदी का मत है कि "मागधी से ही भोजपुरी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी विकसित हुई हैं।" (द्विवेदी 2023, 437)

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ईसा पूर्व दृ 1000 ईस्वी) को सामान्यतः 'प्राकृत काल' कहा जाता है। इस काल में प्रथम प्राकृत के रूप में पालि तथा अभिलेखी प्राकृत का विकास हो चुका था, जबकि आगे चलकर द्वितीय प्राकृत भाषाओं का विस्तार और विकास हुआ। प्राकृत भाषाओं को सामान्य जन–समुदाय की भाषाएँ माना जाता है, क्योंकि इनका प्रयोग लोकजीवन, धार्मिक उपदेशों तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में व्यापक रूप से किया जाता था।

विद्वानों ने प्राकृत भाषाओं का वर्गीकरण धर्म, प्रदेश, प्रयोग तथा लेखन–परंपरा के आधार पर विभिन्न स्तरों में किया है। प्रमुख प्राकृत भाषाओं में शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री, अर्धमागधी तथा मागधी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन भाषाओं का प्रयोग विभिन्न धार्मिक एवं साहित्यिक परंपराओं में व्यापक रूप से हुआ।

ध्वन्यात्मक दृष्टि से प्राकृत भाषाएँ पालि भाषा के अत्यंत निकट मानी जाती हैं। जिस प्रकार पालि में ह्रस्व 'ए' और 'ओ' ध्वनियों के साथ–साथ 'ळ' तथा 'ळ्ह' ध्वनियों का प्रयोग मिलता है, उसी प्रकार प्राकृत भाषाओं में भी इन ध्वनियों का प्रयोग देखा जाता है। इसी प्रकार पालि में प्रयुक्त 'स' ध्वनि प्राकृत भाषाओं में, विशेषतः पश्चिमोत्तर प्रदेशों में, कुछ समय तक 'श', 'ष' तथा 'स' तीनों रूपों में प्रयुक्त होती रही। इससे स्पष्ट होता है कि पालि और प्राकृत भाषाओं के मध्य घनिष्ठ ध्वन्यात्मक एवं भाषिक संबंध विद्यमान थे।

तृतीय प्राकृत काल (500 ईस्वी दृ 1000 ईस्वी) में अपभ्रंश भाषा का विशेष महत्व रहा। छठी शताब्दी के पश्चात् 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ में व्यापक रूप से होने लगा। 'अपभ्रंश' का शाब्दिक अर्थ 'गिरा हुआ' अथवा 'परिवर्तित रूप' माना जाता है। सर्वप्रथम आचार्य व्याडि ने 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग किया। इसके अतिरिक्त पतंजलि, भर्तृहरि, भामह तथा दण्डी जैसे विद्वानों ने भी इस शब्द का उल्लेख किया है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अपभ्रंश को आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता है।

कुछ विद्वानों के अनुसार आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास प्रत्यक्षतः अपभ्रंश से हुआ, जबकि कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि इन भाषाओं का उद्भव 'अवहट्ठ' से हुआ। अपभ्रंश के अतिरिक्त 'देशी भाषा', 'अपभ्रष्ट' तथा 'अवहट्ठ' जैसे नाम भी प्रचलित थे। भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "इस तरह अपभ्रंश और अवहट्ठ मेरे विचार में एक ही भाषा के दो नाम हैं।" (तिवारी 2022, 38)

व्याकरणिक दृष्टि से पश्चिमी और पूर्वी अपभ्रंश में 'अ' ध्वनि के संवृत एवं विवृत भेद विकसित हो गए थे। लेखन में 'ऋ' का प्रयोग किया जाता था, किंतु उसका उच्चारण 'रि' के रूप में होता था। इसी काल तक नपुंसकलिंग का प्रयोग लगभग समाप्त हो गया था। इन परिवर्तनों से स्पष्ट होता है कि अपभ्रंश भाषा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के निर्माण की संक्रमणकालीन अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल (1000 ईस्वी से वर्तमान तक) में आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास तृतीय प्राकृत अर्थात् अपभ्रंश से हुआ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं से विकसित शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री, अर्धमागधी तथा मागधी के अतिरिक्त ब्राचड़ तथा खस भाषाओं ने भी आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कपिलदेव द्विवेदी के अनुसार शौरसेनी अपभ्रंश से पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी तथा गुजराती भाषाओं का विकास हुआ; पैशाची अपभ्रंश से लहँदा; महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी; मागधी अपभ्रंश से बिहारी, बंगाली, उड़िया तथा असमिया; अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिंदी; ब्राचड़ अपभ्रंश से सिंधी एवं पंजाबी; तथा खस अपभ्रंश से पहाड़ी भाषाओं का विकास हुआ।

इस काल में भारतीय आर्य भाषाओं की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिनके परिणामस्वरूप संयोगात्मक (लदजीमजपब) भाषाएँ क्रमशः वियोगात्मक (।दंसलजपब) स्वरूप की ओर अग्रसर हो गईं। इस परिवर्तन ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की व्याकरणिक एवं संरचनात्मक विशेषताओं को नई दिशा प्रदान की।

सिंहली भाषा का ऐतिहासिक विकास– श्रीलंका में सिंहली समुदाय द्वारा सिंहली भाषा का प्रयोग किया जाता है। जे. बी. दिसानायक के अनुसार, हिंदी, बंगाली, गुजराती, मराठी, पंजाबी तथा कश्मीरी जैसी अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भाँति सिंहली भी एक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा है, किंतु इसका प्रयोग मुख्यतः श्रीलंका तक ही सीमित है। सिंहली भाषा की ध्वन्यात्मक संरचना के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इसका विकास भी भारतीय आर्य भाषा–परिवार से ही हुआ है।

हालाँकि, सिंहली भाषा का विकास अन्य भारतीय आर्य भाषाओं से कुछ भिन्न रूप में हुआ, क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से यह अन्य भारतीय आर्य भाषाओं से पृथक रही। श्रीलंका एक द्वीपीय देश होने के कारण सिंहली भाषा में अनेक स्वतंत्र एवं विशिष्ट भाषिक विशेषताएँ विकसित हो गईं। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत में द्रविड़ भाषा–परिवार के व्यापक प्रभाव के कारण सिंहली भाषा का विकास भारतीय आर्य भाषाओं से अलग दिशा में भी होता रहा।

सिंहली भाषा की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों के मध्य लंबे समय से विचार–विमर्श चलता रहा है। मुख्य विवाद इस बात को लेकर है कि सिंहली भाषा का विकास पूर्वी भारत के कलिंग क्षेत्र से संबंधित बोली पर आधारित था अथवा पश्चिमी भारत के सौराष्ट्र अथवा गुजरात क्षेत्र की किसी बोली पर। इस विषय में भाषावैज्ञानिक अनुसंधानों के साथ–साथ ऐतिहासिक प्रमाण भी प्रस्तुत किए गए हैं।

श्रीलंका के प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य महावंश (डीāअंदें) के छठे अध्याय तथा दीपवंश(क्रीचंअंदें) के नवें अध्याय में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत से आए राजा विजय एवं उनके अनुयायियों का उल्लेख मिलता है। "लगभग 5वीं सदी ई. पू. में विजय नामक राजा के साथ कुछ भारतीय लंका में जाकर बस गए। इन्हीं लोगों के साथ यहाँ से यह भाषा भी अपने मूल रूप में गई। विजय राजा तथा उसके साथी कहाँ के थे, इस सम्बन्ध में विवाद है। राजा विजय तथा उसके साथी कहाँ के थे, इस सम्बन्ध में विवाद है। ये लोग जहाँ के रहने वाले होंगे, वहीं की भाषा से सिंहली का संबंध होगा" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 216)

राजा विजय तथा उनके साथियों की मूल भूमि के संबंध में विद्वानों के मध्य मतभेद पाए जाते हैं। कुछ विद्वान उन्हें पूर्वी भारत, विशेषतः बंगाल क्षेत्र से संबंधित मानते हैं, जबकि अन्य विद्वान उनका संबंध सौराष्ट्र, लाट अथवा गुजरात क्षेत्र से जोड़ते हैं। "अधिक सम्भावना सौराष्ट्र की ही है। इस प्रकार सिंहली का सम्बन्ध सौराष्ट्र की पालि या पालि पूर्व भाषा से है। बाद में बौद्ध धर्म के कारण मगध से भी लंका का सम्बन्ध हो गया और इस पर पालि तथा संस्कृत का भी कुछ प्रभाव पड़ा। सिंहली प्राकृत, भारतीय प्राकृतों की तरह लंका की प्राकृत है।" (तिवारी, भाषा विज्ञान 2023, 216) ।

सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार, "भारत में 500 ई.पू. जब कि शौरसेनी, सौराष्ट्री, मागधी और अन्य प्रांतीय प्राकृत बोलियाँ विकासशील हो रही थीं, उसी समय लंका में भी उसी पद्धति पर सिंहली प्राकृत का विकास तथा निर्माण हो रहा था।" (चटर्जी 2023, 40) यह मत सिंहली भाषा और भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक एवं भाषिक संबंधों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

अनेक विद्वानों का मत है कि सौराष्ट्र क्षेत्र के लोग साहसी, वीर तथा व्यापार और वाणिज्य में अत्यंत निपुण थे। यही कारण था कि उन्होंने प्राचीन काल से ही विभिन्न विदेशी देशों में व्यापारिक बस्तियों एवं उपनिवेशों की स्थापना की। फलस्वरूप सौराष्ट्र के लोग भारत के विभिन्न भागों के अतिरिक्त श्रीलंका तथा अन्य अनेक देशों तक पहुँचे। इस संदर्भ में उल्लेख किया गया है कि सौराष्ट्रवासी अफ्रीका, मॉरीशस, सीलोन (श्रीलंका), बर्मा (म्यांमार), इंडोनेशिया (जावा), सुमात्रा, इंडो–चाइना, कंबोडिया, मलेशिया, फिलीपींस तथा फिजी आदि देशों में भी जाकर बस गए थे। "The people of Saurashtra are adventurous, brave, adept in trade and commerce, and therefore they have established many commercial colonies in foreign countries, from ancient times. The Saurashtrians had settled in Africa, Mauratius, Ceylon (Shrilanka), Burma (Myanmar), Indonesia (Java), Sumatra, Indo China, Cambodia, Malayasia and Philipines and Fij-" (Sapovadia, 2012)

इन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संपर्कों के आधार पर कुछ विद्वान सिंहली भाषा और पश्चिमी भारत की भाषाओं के मध्य संबंध स्थापित करते हैं। विमल जी. बलगल्ले के अनुसार सिंहली भाषा का व्यवस्थित विकास लगभग आठवीं शताब्दी ईस्वी से स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होता है। अनेक भाषाविदों का मत है कि सिंहली भाषा का विकास शौरसेनी प्राकृत अथवा मागधी प्राकृत से हुआ है। इस प्रकार सिंहली भाषा का भारतीय आर्य भाषा–परिवार से गहरा ऐतिहासिक एवं भाषिक संबंध परिलक्षित होता है।

ऐतिहासिक एवं प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न कालखंडों में भारतीयों का श्रीलंका में अनेक बार आगमन हुआ। इन सतत सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक संपर्कों का प्रभाव सिंहली भाषा एवं संस्कृति के विकास पर भी पड़ा।

- ई.पू 6/5 सन में राजा विजय और उनके दल का आगमन
- ई.पू 6/5 सन में माधुरापुर की राजकुमारी तथा उनके दल का आगमन
- ई.पू 6/5 सन में राजा विजय का भांजा यानी पँडुवस्देव और उनके दल का आगमन
- ई.पू 6/5 सन में शाक्य वंश का भद्रकात्याना तथा उनके दल का आगमन
- ई.पू 3 सन में सम्राट अशोक के पुत्र महेंद्र के साथ लोगों का आगमन

सिंहली भाषा की उत्पत्ति एवं विकास पर भारतीय प्राकृत भाषाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। तथापि, यह प्रभाव भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित था, इस विषय में विद्वानों के मध्य विभिन्न मत पाए जाते हैं। भाषावैज्ञानिकों एवं इतिहासकारों ने अपने अनुसंधानों के आधार पर इस संबंध में अनेक सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि कुछ विद्वानों के अनुसार सिंहली भाषा का विकास भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों क्षेत्रों की भाषाई परंपराओं के संयुक्त प्रभाव से हुआ है।

अपने लघु शोध पत्र 'सिंहल भाषावे आरंभय हा बिकाशय' (Sinhala Bhāṣāvē Ārambhaya hā Vikāsaya) में कनंगमुवे राहुल थेरो ने इन विभिन्न मतों एवं सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन निम्न प्रकार प्रस्तुत किया है।

उत्तर–पश्चिमी एवं पश्चिमी भारत संबंधी मत– एस. के. चटर्जी, सेनरत परनवितन, विलियम गैगर तथा एच. डब्ल्यू. कोडरिंगटन जैसे विद्वानों के अनुसार राजकुमार विजय का मूल निवास सौराष्ट्र क्षेत्र था, जो भारत के पश्चिमी भाग से संबंधित माना जाता है। इसी आधार पर ये विद्वान सिंहली भाषा के विकास को पश्चिमी भारत की भाषाई परंपराओं एवं प्राकृत भाषाओं के प्रभाव से संबंधित मानते हैं। अपने मत के समर्थन में उन्होंने अनेक भाषिक, ध्वन्यात्मक तथा व्याकरणिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया है, जो सिंहली भाषा और पश्चिमी भारतीय प्राकृतों के मध्य घनिष्ठ संबंधों की ओर संकेत करती हैं।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं में प्रयुक्त 'व' ध्वनि जिस प्रकार पश्चिमी एवं उत्तर– पश्चिमी भारतीय भाषाओं में संरक्षित रूप में पाई जाती है, उसी प्रकार की ध्वन्यात्मक प्रवृत्ति सिंहली भाषा में भी दृष्टिगोचर होती है। उदाहरणस्वरूपः

- विंशति → विसि (Viṁśati → Visi)
- विहार → वेहेर (Vihār → Vehera)
- वीणा → वेव (Vīṇā → Vēṇa)
- वाल → वल (Vāla → Val)

इसी प्रकार 'य' ध्वनि का प्रयोग भी सिंहली भाषा में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उदाहरणस्वरूपः

- योजन → योदुन (Yojana → Yodun)
- यौवन → योवुन (Yauvana → Yovun)
- यक्ष → यक (Yakṣa → Yak)

भारत–ईरानी अथवा पैशाची भाषाओं में पाई जाने वाली कुछ विशिष्ट ध्वन्यात्मक प्रवृत्तियाँ सिंहली भाषा में भी दृष्टिगोचर होती हैं। उदाहरणस्वरूप, 'न' ध्वनि का 'ल' में परिवर्तन, 'ल' का 'न' में परिवर्तन तथा 'स' ध्वनि का 'ह' में रूपांतरण जैसी ध्वन्यात्मक विशेषताएँ सिंहली भाषा में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। उदाहरणस्वरूपः

- ललाट → नळल (Lalāṭa → Naḷal)
- लाङ्गल → नँगुल (Lāṅgal → Naṅgul)
- वृषभ → वेहेप (Vṛṣabha → Vehep)
- श्रमण → हमण → महण (Śramaṇ → Hamaṇa → Mahaṇa)
- सगस दिने → सगह दिने (Sagasa dine → Sagaha dine)

सिंहली भाषा में प्रयुक्त 'एक' तथा 'अक' जैसे प्रत्यय– रूप भी उत्तर– पश्चिमी भारतीय भाषाओं के साथ उसकी भाषिक निकटता को सूचित करते हैं।

इसी प्रकार, उत्तर– पश्चिमी भारत की सिंधु घाटी क्षेत्र में प्रचलित 'ग्रामाणी' शब्द का सिंहली भाषा में 'गमणी' रूप में प्रयोग इस भाषिक संबंध को और अधिक स्पष्ट करता है। उदाहरणस्वरूप, मिहिंतले के एक शिलालेख में 'गमणि उति महरज' का प्रयोग प्राप्त होता है, जो सिंहली भाषा पर उत्तर– पश्चिमी भारतीय भाषाई प्रभाव का महत्वपूर्ण प्रमाण माना जाता है।

- उदाहरण– गमणी उति महरज (Gamaṇī Uti Maharaja) (3 ई. पू. मिहिंतला शिलालेख)

डी. ई. हेट्टिआरच्चि के अनुसार सिंहली भाषा में पाई जाने वाली पुनरावृत्ति अथवा द्विरुक्त प्रयोग की यह विशेषता सिंहली भाषा और उत्तर–पश्चिमी भारतीय भाषाओं के मध्य भाषिक समानता को इंगित करती है। उदाहरण के लिएः

- अव्ल पव्ल (Avl Pavl)
- सुद्द बुद्द (Sudda Budda)

परणवितान के अनुसार, उत्तर– पश्चिमी सिंधु घाटी क्षेत्र में 'गोधुम' शब्द का प्रयोग 'गेहूँ' के अर्थ में किया जाता था, किन्तु श्रीलंका में यही शब्दार्थ परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरते हुए 'धान' (Paddy) के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। उदाहरण के लिएः

- गोधुम → गोयम (Godhuma → Goyam)

प्राकृत सिंहली भाषा में 'श', 'ष' तथा 'स' ध्वनियों के प्रयोग को भी उत्तर–पश्चिमी एवं पश्चिमी भारतीय प्राकृतों की उच्चारणगत विशेषताओं से संबंधित माना जाता है। उदाहरणस्वरूपः

- तिष्य → तिस (Tiṣẏ → Tisa)
- संघ → सँग (Saṅgha → Saṅga)

यद्यपि कुछ विद्वानों का मत है कि 'श' ध्वनि का प्रयोग पूर्वी भारतीय भाषाई प्रभाव का संकेतक भी हो सकता है, तथापि समग्र रूप से उपर्युक्त भाषिक एवं ध्वन्यात्मक साक्ष्य सिंहली भाषा पर पश्चिमी एवं उत्तर– पश्चिमी भारतीय भाषाओं के प्रभाव की ओर संकेत करते हैं।

पूर्वोत्तर और पूर्वी संबंधी मत– मोहम्मद शाहिदुल्ला, रॅबुकवेल्ले सिद्धार्थ थेरो तथा पी. बी. एफ. विजेरत्ने जैसे विद्वान सिंहली भाषा की उत्पत्ति एवं विकास के संदर्भ में पूर्वी तथा उत्तर– पूर्वी भारतीय भाषाई प्रभाव को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार श्रीलंका और पूर्वी भारत के मध्य भाषिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संबंध अत्यंत प्राचीन रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप सिंहली भाषा के निर्माण और विकास में पूर्वी भारतीय आर्य भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इन विद्वानों के मतानुसार भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी एवं उत्तर– पूर्वी क्षेत्रों में प्रचलित अनेक भाषिक विशेषताएँ सिंहली भाषा में भी परिलक्षित होती हैं। उदाहरणस्वरूप, पूर्वी भारत की प्रमुख नदी के नाम से संबद्ध 'गंगा' शब्द का रूपांतरित स्वरूप सिंहली भाषा में 'गँग' के रूप में प्राप्त होता है। यह भाषिक समानता दोनों क्षेत्रों के मध्य प्राचीन सांस्कृतिक एवं भाषाई संपर्क का संकेत देती है।

इसी प्रकार, ईसा पूर्व तृतीयदृद्वितीय शताब्दी के सिंहली अभिलेखों में प्रयुक्त 'ए' विभक्ति– प्रत्यय, विशेषकर प्रथमा एकवचन के रूप में, पूर्वी भारतीय आर्य भाषाओं से संबंधित माना जाता है। भाषावैज्ञानिकों के अनुसार यह विशेषता अर्धमागधी तथा अन्य पूर्वी प्राकृत भाषाओं के प्रभाव की ओर संकेत करती है। उदाहरणस्वरूप–

- अपि / अप(Api / Apa), तोपि / तोप (Topi / Topa) (ये सभी रूप पूर्वी अशोक प्राकृत से संबंधित हैं।)
- अफे– अप (Aphe → Apa)
- तुऐ– तोप (Tuai → Topa)

भाषावैज्ञानिकों के अनुसार अशोक–प्राकृत के अभिलेखीय रूपों में प्रयुक्त वाक्य– विन्यास, पद–प्रयोग तथा व्याकरणिक संरचनाएँ अनेक स्तरों पर प्राचीन सिंहली अभिलेखों से साम्य रखती हैं। यह समानता दोनों क्षेत्रों के मध्य प्राचीन काल से विद्यमान सांस्कृतिक एवं भाषाई संपर्कों का महत्वपूर्ण प्रमाण मानी जाती है।

उदाहरणस्वरूप, अशोक– प्राकृत के एक अभिलेख में प्रयुक्त वाक्यः

'देवानं पियस वचनेन तोसलियं महामाता नहल जयो वत पियं आकिजि दखामि हकं नं इझामि'

(Devānaṁ Piyasa Vacanena Tosaliyaṁ Mahāmātā Nahala Jayo Vata Piyaṁ Ākiji Dakhāmi Hakaṁ Naṁ Ijhāmi)

उदाहरणस्वरूप, श्रीलंका के ववुनिया में पेरियकुलम के एक अभिलेख में प्रयुक्त वाक्यः

'रझ नगझित रझ उति झया अबि अनुरादिच रझ उतिझ करापिते ये इम लेणे चतु दिगग संघस दिने'

Rājha Nagajhita rājha Uti jhayā abi Anurādica rājha Utijha karāpite ye ima leṇe catu digaga saṅghasa dine

प्राकृत सिंहली में भी पूर्वी पाली और मागधी भाषाओं के वे रूप मिलते हैं, जो संस्कृत में उपलब्ध नहीं हैं।

पाली–

- अक्खणा → अकुणु (Akkhaṇā → Akuṇu)
- पच्छि → पेस (Pacchi → Pesa)

अर्ध मागधी

- पाय → पा (Pāya → Pā)
- रायि → रै (Rāyi → Rǣ)

सिंहली भाषा को पाली भाषा के अधिक निकट माना जाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे उत्तर–पश्चिमी भारतीय भाषाएँ संस्कृत के तथा पश्चिमी भाषाएँ पाली के निकट मानी जाती हैं। इस दृष्टि से संस्कृत, पाली और सिंहली के बीच कुछ समांतर रूप विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उदाहरणार्थः

संस्कृत	**पालि**	**सिंहली**
आरत्ति (Āratti)	रतन (Ratana)	रियन (Riyan)
अगरू (Agarū)	अगलु (Agalu)	अगुल (Agul)
संस्कृत	**अर्ध मागधी**	**सिंहली**
अनन्त (Ananta)	नत्त (Natta)	नत (Nat)
अपराध्येते (Aparādhyete)	अपरज्झति (Aparajjhati)	अपराधय (Aparādhaya)
तिष्ठति (Tiṣṭhati)	विटति (Viṭati)	सिटी (siṭī)

समग्रतः, उपर्युक्त भाषिक, अभिलेखीय तथा रूपात्मक साक्ष्य सिंहली भाषा पर पूर्वी एवं उत्तर–पूर्वी भारतीय भाषाओं के प्रभाव को पुष्ट करते हैं। यह मत सिंहली भाषा के उद्गम एवं विकास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

लिपि– हिंदी की देवनागरी लिपि तथा सिंहली लिपि, दोनों की उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से मानी जाती है। प्राचीन ब्राह्मी अभिलेखों को सामान्यतः दो वर्गोंकृपूर्व ब्राह्मी तथा अपर ब्राह्मीकृमें विभाजित किया जाता है। श्रीलंका के मिहिंतले, वेस्सगिरिय, सितुलपव्व तथा रजगल जैसे अनेक स्थलों से पूर्व ब्राह्मी अभिलेख प्राप्त हुए हैं। प्रारंभिक काल की यह लिपि भारत की अशोककालीन ब्राह्मी लिपि से अत्यधिक साम्य रखती थी तथा कुछ स्थानों पर दोनों के मध्य केवल कुछ अक्षरों का ही अंतर दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि पूर्व ब्राह्मी के अध्ययन के संदर्भ में विद्वान केवल श्रीलंकाई स्रोतों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि भारत में उपलब्ध संबंधित शोधग्रंथों एवं अभिलेखीय अध्ययनों का भी सहारा लेते हैं। इस संदर्भ में अहमद हसन दानी, जी. बूलर तथा राज बलिपांडे द्वारा रचित Indian Palaeography जैसे ग्रंथ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिन्हें पुरालिपि– विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

अक्षरों की उत्पत्ति एवं विकास के विषय में श्रीलंका में भी अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की गई है। ब्राह्मी अक्षरों के क्रमिक विकास को समझने के लिए उनकी उत्पत्ति तथा रूपांतरण की प्रक्रिया का ज्ञान आवश्यक माना जाता है। परणवितान की Inscription of Ceylon के प्रथम खंड में इस विषय का संक्षिप्त विवेचन प्राप्त होता है। इसी प्रकार कोथ्मले अमरवंश थेरो द्वारा रचित लक्दिव सेललिपि में भी इस विषय पर उपयोगी जानकारी उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त अक्षरों की उत्पत्ति और विकास को केंद्र में रखकर कई स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे गए हैं। इनमें पी. ई. ई. फर्नांडो का सिंहल अक्षर मालावे संभवय हा विकासय (सिंहल अक्षरमाला की उत्पत्ति और विकास) विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसका अनुवाद तिस्स कारियवसम ने किया। इसके साथ ही ओक्कंपिटिये पञ्ञासार थेरो की सिंहल अक्षर रूप विकासय हा भारतीय आभासय, बंदुसेन गुणसेकर की सिंहल अक्षर सम्भवय हा एहि विकासनय, जयसिरी लंका की सिंहल वर्ण मालावे विकासनय तथा गल्वेवे विमलखंति थेरो की श्रीलांकेय ब्राह्मी अक्षर परिणामय इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण अध्ययन– ग्रंथों में सम्मिलित हैं।

यद्यपि देवनागरी और सिंहली दोनों लिपियाँ ब्राह्मी से विकसित हुई हैं, तथापि उनके स्वरूप एवं संरचना में उल्लेखनीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं। देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषता उसकी शिरोरेखा है, जबकि सिंहली लिपि के अक्षर मुख्यतः गोलाकार रूप में विकसित हुए हैं। विद्वानों के अनुसार सिंहली अक्षरों का यह गोलाकार स्वरूप प्राचीन लेखन– परंपरा की व्यावहारिक आवश्यकताओं का परिणाम है। प्राचीन काल में सिंहली भाषा को मुख्यतः ताड़पत्रों पर लिखा जाता था। ताड़पत्रों पर सीधी एवं तीक्ष्ण रेखाएँ अंकित करने से उनके क्षतिग्रस्त होने की संभावना रहती थी; अतः लेखन को सुगम बनाने तथा लेखन– सामग्री की सुरक्षा सुनिश्चित करने के

लिए अक्षरों का रूप क्रमशः गोलाकार होता गया। फलस्वरूप सिंहली वर्णमाला ने एक विशिष्ट गोलाकार स्वरूप ग्रहण किया, जो आज भी उसकी प्रमुख पहचान है।

निष्कर्ष– निष्कर्षतः भारत और श्रीलंका के मध्य भाषाई संबंध अत्यंत प्राचीन एवं गहरे हैं। सिंहली भाषा भारतीय आर्यभाषा–परिवार से संबंधित है तथा उसके विकास में प्राकृत, पालि, संस्कृत और भारतीय भाषाई परंपराओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संपर्कों के कारण सिंहली भाषा में भारतीय भाषाओं के अनेक ध्वन्यात्मक, रूपात्मक एवं शब्दगत प्रभाव परिलक्षित होते हैं। साथ ही, देवनागरी और सिंहली दोनों लिपियों का उद्गम ब्राह्मी लिपि से होने के कारण उनके लिपिगत संबंध भी स्पष्ट हैं। अतः हिंदी, भारतीय आर्यभाषाओं और सिंहली भाषा के बीच विद्यमान पारदेशीय आपसदारियाँ दक्षिण एशियाई भाषाओं के ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, माया, और बिजेन्द्र सिंघल। 2003। भाषा– परिचयः भाषा–विज्ञान के सिद्धांत तथा भाषा का विस्तृत एवं प्रामाणिक अध्ययन। दिल्लीः कला मंदिर।
2. कुमार, अवनीश, अनुराधा सेंगर, नूतन पाण्डेय, और हुकम चंद मीना। 2019। देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण। प्रथम संस्करण। नई दिल्लीः केंद्रीय हिंदी निदेशालय।
3. गुरु, कामताप्रसाद। 2012। हिंदी व्याकरण। द्वितीय संस्करण। इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन।
4. गुप्ता, मनोरमा। 2010। भाषा– शिक्षण सिद्धांत और प्रविधि। आगराः केंद्रीय हिंदी संस्थान।
5. चटर्जी, सुनीति कुमार। 2023। "सिंहल की भाषा।" आजकल पत्रिका, संख्या 40 (फरवरी), नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग।
6. तिवारी, भोलानाथ। 1999। हिंदी भाषा की संरचना। चौथा संस्करण। नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
7. तिवारी, भोलानाथ। 2022। भाषाविज्ञान। उनहत्तरवाँ संस्करण। इलाहाबादः किताब महल।
8. तिवारी, भोलानाथ। 2023। भाषा विज्ञान। नई दिल्लीः किताब पहल पब्लिशर्स
9. द्विवेदी, कपिलदेव। 2023। भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र (या भाषा–विज्ञान और भाषाशास्त्र)। अठारहवाँ संस्करण। वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. बाहरी, हरदेव, और केदार शर्मा। 2020। सामान्य हिंदी। प्रथम संस्करण। जयपुरः जैन प्रकाशन मंदिर।
11. राम, जय। 2021। ध्वनि विज्ञान और रूप विज्ञान। प्रथम संस्करण। नई दिल्लीः भाषा प्रकाशन।
12. शर्मा, देवेन्द्रनाथ, और दीप्ति शर्मा। 2022। भाषाविज्ञान की भूमिका। तेरहवाँ संस्करण। दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
13. Batra, Nikhil. 2023. "Hindi Diwas 2023: What Percentage of People Can Speak Hindi in India\ Check Here." Jagran Josh, December 28, 2023.
14. Central Hindi Directorate. 2018. "Brief History of Hindi." Archived May 4, 2018. http://www.hindinideshalaya.nic.in/hindi/hindi_orgin/briefhistory.htm.
15. Disanayake, J. B. 1991. The Structure of Spoken Sinhala 1: Sounds and Their Patterns. Maharagama: National Institute of Education.
16. Disanayake, J. B. 2006. Sinhala Akshara Vicharaya. 3rd ed. Sumitha Prakashakayo.
17. Disanayake, J. B. 2021. Basaka Mahima. Sumitha Prakashakayo.
18. Ethnologue. 2016. "Punjabi." https://www.ethnologue.com/language/pnb.
19. Kaṇaṁhamuvē Rāhula Himi. 2014. "Siṁhala Bhāṣāvē Āraṃbhaya Hā Vikāśaya (Kri.Pū.3 Sita Kri.Va. 4)." Pravachana: Śrī Laṅkā Bhikṣu Viśvavidyālayīya Śāstrīya Saṅgrahaya 5, no. 1: 52–81.
20. Karunatillake, K. S. 1992. An Introduction to Spoken Sinhala. Colombo: Godage International Publishers.
21. Sapovadia, Vrajlal. 2012. "Saurashtra: A Language, Region, Culture & Community." SSRN Electronic Journal. https://doi.org/10.2139/ssrn.2033685.
22. The World Factbook. 2023. "Sri Lanka: People and Society." Washington, DC: Central Intelligence Agency. https://www.cia.gov/the-world-factbook/countries/sri-lanka/üpeople-and-society.

*****